PRESS INFORMATION BUREAU
GOVERNMENT OF INDIA
SHIMLA

1.	**Title of the Story / Report**	विश्व शान्ति और गांधी के समक्ष चुनौतियां
2.	**Name of the publication**	दैनिक सवेरा टाइम्स (लेख)
3.	**Page no**	06
4.	**Date**	29-09-2020
5.	**Language of publication**	हिंदी
6.	**Place of publication**	शिमला

Gandhi 150

विश्व शांति और गांधी के समक्ष चुनौतियां

गांधी दर्शन

डा. मनीष शर्मा

अहिंसा उच्चस्तरीय नैतिकता की ओर ले जाती है, जो क्रमागत विकास का लक्ष्य है। जब तक हम अन्य सभी जीवित प्राणियों को नुक्सान पहुंचाना बंद नहीं करते, तब तक हम बर्बर ही हैं।'-थॉमस एडिसन। यह देखा गया है कि दुनिया भर में, लोगों ने हिंसा के अधिक स्पष्ट प्रत्यक्ष और संरचित स्वरूपों और हिंसा के अधिक असंरचित विस्तार की चुनौतियों का सामना करने के लिए अभिनव और सफल अहिंसक तरीके अपनाए हैं जो हमारे जीवन में गहरे निहित हैं। लेकिन दूसरी ओर, अपना समूचा विश्व इतिहास गवाह है, जिसने बहुत कम पुरुषों को मानव जाति पर एक मजबूत प्रभाव डालते देखा है।

इनमें से कुछ ने शांति का संदेश दिया, कुछ ने सम्मान और सहिष्णुता की वकालत की, कुछ ने सामाजिक कार्यों के माध्यम से, कुछ ने अधिकारों और मानवीय गरिमा के लिए और कुछ ने राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए कार्य किया। लेकिन बहुत कम लोगों ने इन सभी को एक साथ जोड़कर जीवन को एक इकाई के रूप में देखा है। उनमें प्रमुख थे महात्मा गांधी। एक कमजोर शारीरिक बनावट वाला लेकिन एक दृढ़ निश्चय रखने वाला व्यक्ति जो एक समय में स्वभाव और प्रकृति से बेहद शर्मीला था उसने महा शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राज्य की खिलाफत की और अपने नैतिक बल से उन्हें मुकाबला करने के लिए चुनौती दी। इस साधारण आदमी, मोहनदास के आदेशों की, लाखों अशिक्षित जनता पालन करते थे और यह व्यक्ति अहिंसक संघर्ष में उन सबका नेतृत्व कर रहा था, उनकी यह यात्रा एक अनुकरणीय उदाहरण रही। एक आदमी से, जिसने खुद को एक दुर्भाग्यपूर्ण और असहाय स्थिति में पाया जब उसे नस्लीय कारणों से ट्रेन से बाहर फैंक दिया गया था। अंततः एक शहीद के रूप में उसने अमरत्व प्राप्त कर लिया।

उसका जीवन प्रयोगों से भरा था-सत्य के उच्चतम मूल्य के साथ वे मूल्य जो अधिकांश धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रंथों में निहित है। उन्होंने निडरता से सच बोला, देखा कि कई आसन्न खतरे दुनिया में बढ़ रहे हैं जैसे कि हिंसा में वृद्धि, सांप्रदायिक असमानता, आर्थिक समस्याएं, सामाजिक विषमताएं, पारिस्थितिक गिरावट और सांस्कृतिक पतन। उसने इन सभी के उत्तर प्रदान किए, लेकिन यह बाद दीगर है कि कई वर्षों तक उन पर

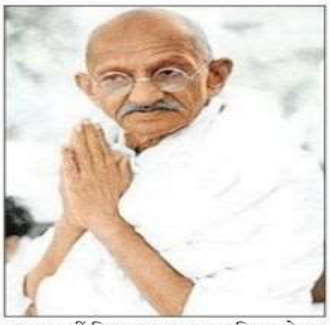

अमल नहीं किया गया। आज, दुनिया उसे पुनः खोज रही है और दोहरा रही है कि वह एक दूरदर्शी था। उनके सिद्धांत सरल हैं, फिर भी उनका अनुसरण करना कठिन है,और उनके आदर्श अनुकरण के योग्य हैं, फिर भी मानव जाति ने उनकी उपेक्षा की। क्या वजह है कि आज भी वे इस दुनिया के लिए प्रासंगिक है? क्या महात्मा गांधी द्वारा स्वराज को जनमानस के पटल पर अंकित करने के फलस्वरूप अहिंसा पहली बार एक बड़े पैमाने पर एक शक्तिशाली और प्रभावी सामाजिक ताकत में तब्दील हो गई थी? इसलिए इस लेख द्वारा लेखक शांति, सच्चाई और अहिंसा के संदेश को बेहतर समझने के लिए कुछ उत्तरों का पता लगाने की कोशिश करेगा। यह वे सिद्धांत हैं जिन्हें दुनिया पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रही है। मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) ने ठीक ही कहा था,'महात्मा गांधी मानव इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यीशु मसीह के प्रेम को नैतिकता से ऊपर उठाया, उसे व्यक्तियों के बीच संवाद तक सीमित न रखकर इसे बड़े पैमाने पर एक शक्तिशाली और प्रभावी सामाजिक शक्ति के रूप में बनाया। अगर मानवता की प्रगति करनी है, तो गांधी अपरिहार्य हैं। उन्हें अनदेखा करना मानव के लिए एक जोखिम उठाना सिद्ध होगा।' दक्षिण अफ्रीकी यात्रा के दौरान उनके विरोधी, जनरल जॉन क्रिस्टियन स्मट्स ने अपनी नैतिक श्रेष्ठता के लिए गांधी को सबसे अधिक श्रद्धांजलि दी। उन्होंने अपने विचार इस रूप में व्यक्त किए, 'यह मेरा भाग्य था कि मैं एक ऐसे व्यक्ति का विरोधी हूं जिसके लिए तब भी मेरा सबसे ज्यादा सम्मान था। दक्षिण अफ्रीका के एक छोटे स्तर के संघर्ष ने गांधी के चरित्र के कुछ गुणों को लक्षित किया, जो तब से भारत में एक बड़े पैमाने पर हुए परिवर्तनों में प्रमुखता से प्रदर्शित हो रहे हैं और वे दिखाते हैं कि जब वह पूरे तौर पर उन मुद्दों को उठाने के लिए तैयार हो गए थे, जिसके लिए वे आजीवन लड़े थे, उस परिस्थिति में भी वे मानवीय पृष्ठभूमि को कभी नहीं भूले, न कभी उन्होंने अपना आपा खोया और न ही नफरत की। उन्होंने इन सभी प्रयत्नों में अपना मृदु हास्य बनाए रखा। महात्मा या महान आत्मा बनने से पहले, इंगलैंड से दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के दौरान, उन्होंने अपने मास्टर पीस को एक छोटी सी पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया, जो 'हिंद स्वराज' शीर्षक से समाज के कई संघर्षों को उजागर करती है।

इसमें उन्होंने दो प्रमुख संदेश दिए। पहले संदेश में उन्होंने आधुनिक सभ्यता की निंदा की और स्वदेशी संस्कृति और मूल्यों के महत्व का एहसास दिलाया। दूसरे संदेश में उन्होंने हिंसा को दूर करने के लिए तथा ब्रिटिश प्राधिकरण का मुकाबला करने के लिए एवं दुश्मन को परास्त करने के लिए अहिंसा को अंतिम नैतिक हथियार के रूप में अपनाने का सुझाव दिया। सामाजिक दायरे में, गांधी ने भारत के लिए एक जातिविहीन समाज की कल्पना की। प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि,'गांधी राजनीतिक इतिहास में अद्वितीय हैं। उन्होंने उत्पीड़ित लोगों के मुक्ति संघर्ष के लिए एक पूरी तरह से नई और मानवीय तकनीक का आविष्कार किया है और यह उन्होंने बड़ी ऊर्जा और भक्ति के साथ किया। वह नैतिक प्रभाव जो उन्होंने सभ्य दुनिया के माध्यम से गंभीर विचार को पर छोड़ा है, वह आज के युग में कहीं अधिक टिकाऊ हो सकता है, चाहे कितना भी क्रूर बल आज के समय में विद्यमान हो। हम सौभाग्यशाली हैं और हमें आभारी होना चाहिए कि भाग्य ने आने वाली पीढ़ियों को एक चमकदार मशाल के रूप में एक अनूठा उपहार दिया है।'

(लेखक गांधीवादी और शांति अध्ययन विभागाध्यक्ष एवं गांधी भवन, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के मानद निदेशक हैं)

दैनिक सवेरा Tue, 29 September 2020
epaper.dainiksaveratimes.org/c/55302817